# ( कविता )
# उड़ानः बेड़ियों से परे

पैरों में लिपटी रिवाजों की ज़ंजीर थी,

सदियों से लिखी गयी वही एक तस्वीर थी....

घुटनों के बल बैठी, थमी हुई वो सांसें,

डर की दीवारों में क़ैद थी वो आंखें....

मगर एक दिन, एक शिद्दत जागी है,

डर को पीछे छोड़, वो आगे भागी है।

टूट गयी वो कड़ियां, जो उसे रोकती थी,

ज़ंजीरें भी अब उसके जुनून से कांपती थी।

रास्ते में कांच हैं, कांटे हैं, ज़ख्म भी होंगे,

पर जो कदम बढ़ गए हैं, वो अब वापस न होंगे।

हर ज़ख्म उसके संघर्ष की एक नयी दास्तां कहेगा,

अब ये दरिया रुकेगा नही, ये बस बहता रहेगा....

**दिव्या कुमारी**
**भूगोल विभाग**
**2023-27**
**231920**